B.A-2

Notes. Objective type on Raga Aadana.

* इस राग की उत्पत्ति आसावरी थाट से मानी गई है।
* इसका वादी स्वर तार 'सा' और संवादी पंचम है,
* रात्रि के तीसरे प्रहर में इसे गाया बजाया जाता है।
* आरोह में गंधार वर्ज्य और अवरोह में वक्र है।
* रात्रि के तीसरे प्रहर में इसे गाया बजाया जाता है।
* इसकी जाति षाडव- सम्पूर्ण है।
* सर्व-प्रथम मध्य काल के लोचन कवि-कृत राग तरंगिणी में इसका वर्णन मिलता है।
* कुछ गुणीजन इसे मध्य और कानड़ा का मिश्रित रूप मानते हैं और कुछ सुघराई, कानड़ा और सारंगा का
* यह राग उत्तरांग प्रधान तथा चंचल प्रकृति का है।